हिंदी विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 26 July- 01 August 2026

भक्ति-शक्ति-समरसता की
आषाढ़ी वारी

TJSB SAHAKARI BANK LTD. MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank
ONE ACCOUNT.
SAVINGS
+
PENSION.
Your existing Savings Account also can act as a Pension Account
www.tjsb.bank.in | : 022-48897204

अनुक्रमणिका

◆ देवशयनी एकादशी व चातुर्मास का विज्ञान	पूनम नेगी	04
◆ आषाढ़ी वारी भक्ति का महापर्व	प्रेम कुमार चौबे	06
◆ भक्ति, समर्पण व समरसता का जीवंत उत्सव	लवकुश तिवारी	09
◆ भक्ति और शक्ति की अक्षुण्ण परम्परा	डॉ. वेदप्रकाश दुबे	11
◆ ज्ञान व संस्कार से सींचते गुरु	डॉ. राकेश भट्ट	13
◆ आक्रोश, हाइजैकिंग और लोकतंत्र की परीक्षा	आशीष कुमार 'अंशु'	16
◆ सत्र की शुरुआत हंगामे के साथ	संजय राय	18
◆ टेलीकॉम कम्पनियों की दादागिरी	डॉ. शुभ्रता मिश्रा	19
◆ धीमे कदमों से लें यात्रा का आनंद	संकलन	21
◆ जब बनाना हो पर्यावरण में करियर	अपर्णा झा	23
◆ यथार्थवादी उपन्यासकार प्रेमचंद	विजय कुमार	25
◆ स्पेन बना विश्व फुटबॉल का बादशाह	राजीव रोहित	26
◆ इधर भी देखें	संकलन	28
◆ समाचार	–	29

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर–10, सेक्टर–2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई– 400067. सम्पर्क : 9594991884

महत्व

पूनम नेगी

सनातन हिंदू धर्म में देवशयनी एकादशी व चातुर्मास का क्या महत्व है। इस मास में क्यों मांसाहारी भोजन वर्जित माना जाता है तथा क्यों नहीं कोई मांगलिक कार्य किया जाता है, इस आलेख में विस्तार से चर्चा की गई है।

देवशयनी एकादशी व चातुर्मास का विज्ञान

सनातन हिंदू धर्म के व्रत पर्वों की सुदीर्घ श्रृंखला में एकादशी पर्वों की विशेष महत्ता हमारे पुराण ग्रंथों में वर्णित है। भगवत चिंतन के द्वारा कुछ समय 'स्वयं' में स्थिर होने के लिए हमारे वैदिक ऋषियों ने इन एकादशी व्रत पर्वों का विधान बनाया था ताकि मनुष्य के आचरण और चिंतन में सात्विक वृत्तियों का संचार हो सके। हिंदू तिथि पंचाग के अनुसार सामान्य तौर पर वर्षभर में 24 एकादशी पर्व आते हैं और हर तीसरे अधिकमास वाले वर्ष में दो एकादशी बढ़कर इनकी संख्या 26 हो जाती है। इन एकादशी व्रत पर्वों में आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की देवशयनी एकादशी की विशिष्ट महत्ता है। इस एकादशी पर्व को आषाढ़ी एकादशी, हरिशयनी एकादशी और पद्मनाभा एकादशी के नाम से भी जाना जाता है। इस वर्ष देवशयनी एकादशी का यह पावन पर्व 25 जुलाई को पड़ रहा है। ज्ञात हो कि देवशयनी एकादशी से शुरू होने वाले चार माह (सावन, भादों, अश्विन व कार्तिक) के वर्षाकाल को वैदिक मनीषियों ने चातुर्मास की संज्ञा देकर इस अवधि को आध्यात्मिक उत्थान के लिए विशेष फलदायी बताया है।

देवशयनी एकादशी से जुड़ा रोचक शास्त्रीय कथानक

श्रीमद्भागवत महापुराण में देवशयनी एकादशी से जुड़ा एक रोचक कथानक मिलता है। शास्त्रज्ञ कहते हैं कि एक बार असुरराज विरोचन के पुत्र और भगवान विष्णु के परमभक्त असुरराज बलि ने युद्ध में देवराज इंद्र को पराजित कर स्वर्ग पर अधिकार जमा लिया था। इस विजय से उनके भीतर सत्तामद का थोड़ा अहंकार जग गया। महाविजय के उपलक्ष्य में राजा बलि ने जब अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन किया तो श्रीहरि ने अपने प्रिय भक्त का अहंकार दूर करने के उद्देश्य से वामन अवतार लेकर तीन पग में तीनों लोक नाप लिए। किंतु आश्रयहीन बलि की सहृदयता से प्रसन्न होकर उन्होंने पाताल लोक का राज्य वापस बलि को सौंप दिया, साथ ही वर्षाकाल के 4 माह पाताल लोक में राजा बलि के आथित्य में रहने की प्रार्थना भी स्वीकार कर ली। जिस शुभ तिथि को जगतपालक श्रीहरि विष्णु ने राजा बलि की प्रार्थना स्वीकार की थी, वह तिथि थी देवशयनी एकादशी। तभी से चातुर्मास को श्रीहरि का योगनिद्रा काल मान कर सनातन हिंदू धर्मावलम्बी इस अवधि में श्रीहरि की पूजा आराधना में संलग्न रहते हैं। इस पर्व से जुड़ी एक अन्य कथा सतयुग की है। पद्म पुराण की कथा के अनुसार प्राचीनकाल में मांधाता नाम के एक धर्मात्मा चक्रवर्ती सम्राट थे। एक बार उनके राज्य में भयंकर अकाल पड़ गया। प्रजा की पीड़ा देखकर सम्राट मांधाता ने महातपस्वी ऋषि अंगिरा से समस्या का समाधान पूछा तब ऋषि ने उन्हें देवशयनी एकादशी व्रत का अनुष्ठान करने को कहा। सम्राट ने पूर्ण श्रद्धा से विधिपूर्वक यह व्रत किया। फलस्वरूप राज्य अकाल मुक्त हुआ और सुख समृद्धि लौट आई। तभी से यह व्रत भक्ति और समृद्धि प्रदान करने वाले पर्व के रूप में विख्यात हो गया।

देवशयनी पर्व पर अनंत फल देता है श्रीहरि का अर्चन-वंदन 'देव' यानी भगवान विष्णु और 'शयनी' यानी शयन या विश्राम। शास्त्रीय मान्यता के अनुसार क्षीर सागर में शेषनाग की शय्या

पर निवास करने वाले सृष्टि के पालनकर्ता भगवान श्रीहरि विष्णु आषाढ़ शुक्ल एकादशी से चार माह के लिए योगनिद्रा में लीन हो जाते हैं। इस पर्व पर जगत पालक भगवान विष्णु का शास्त्रोक्त विधि से अर्चन, वंदन, पूजन और आराधन करने से साधक को ईश्वर की असीम अनुकम्पा के साथ मोक्ष की प्राप्ति होती है। देवशयनी एकादशी के दिन भगवान विष्णु को प्रसन्न करने के लिए 'विष्णु सहस्त्रनामम' के निम्न स्त्रोत का पाठ अत्यंत शुभ फलदायी माना जाता है-

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

भावार्थ - मैं उन जगतपालक भगवान विष्णु को नमन करता हूं जो इस सम्पूर्ण सृष्टि के संचालक और रक्षक हैं, जो शांति से परिपूर्ण हैं और विशाल सर्प के ऊपर लेटे हुए हैं, जिनकी नाभि से कमल का फूल निकला हुआ है, जो सम्पूर्ण ब्रह्मांड का सृजन करता है, जो सर्वव्यापी हैं, जिन लक्ष्मीपति के देह की कांति बादलों की तरह श्यामवर्ण है और जिनके नेत्र कमल के समान हैं; उन सम्पूर्ण लोकों के स्वामी श्रीहरि को मैं नमन करता हूं। इसके अतिरिक्त, देवशयनी एकादशी पर भगवान विष्णु को प्रसन्न करने के लिए ॐ नमो भगवते वासुदेवाय जैसे मंत्रों का जाप भी शुभ फलदायी माना जाता है। मान्यता है कि चातुर्मास में सभी तीर्थ ब्रजधाम आ जाते हैं, इसलिए इस अवधि में ब्रज तीर्थ की यात्रा बहुत शुभ मानी जाती है। इस व्रत और भगवान विष्णु की पूजा अर्चना से मनुष्य के सभी सांसारिक कष्ट सहज ही दूर हो जाते हैं और धन धान्य की कमी नहीं होती। साथ ही इस पवित्र तिथि पर जरूरतमंदों और सुपात्रों को दान-दक्षिणा देने से अक्षय पुण्यफल प्राप्त होता है।

इसलिए होती है शुभ व मांगलिक आयोजनों पर रोक

सनातन हिंदू धर्म में शादी-विवाह, मुंडन, जनेऊ संस्कार, गृह प्रवेश, नामकरण आदि सभी मांगलिक कार्यों में सृष्टि के संचालक श्रीहरि विष्णु सहित सभी देवताओं का आह्वान अनिवार्य होता है। किंतु चातुर्मास में सृष्टि के संचालक भगवान विष्णु के योगनिद्रा में रहने से सहायक देव शक्तियों भी प्रसुप्त हो जाती हैं। शुभ शक्तियों का प्रभाव कमजोर हो जाने से ब्रह्माण्ड में मांगलिक ऊर्जा भी शांत हो जाती है। फलतः शुभ कार्यों के परिणाम भी शुभ नहीं आते। इसी कारण चातुर्मास की अवधि में शुभ कार्य वर्जित माने जाते हैं।

***

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

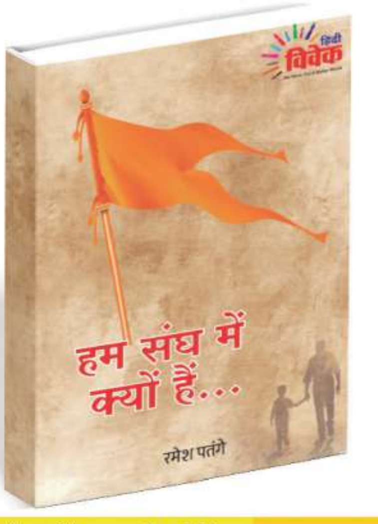

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें
पुस्तक का मूल्य
₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK**

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

आस्था

प्रेम कुमार चौबे

पंढरपुर वारी भारतीय आध्यात्मिक चेतना, संत परम्परा और सांस्कृतिक विरासत का ऐसा अमूल्य प्रतीक है, जो हमें सिखाती है कि प्रेम ही धर्म है, सेवा ही साधना है और नामस्मरण ही ईश्वर तक पहुंचने का सबसे सरल मार्ग है।

भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परम्पराओं में महाराष्ट्र की पंढरपुर वारी का विशिष्ट स्थान है। यह केवल एक धार्मिक यात्रा नहीं बल्कि भक्ति, सेवा, समानता, अनुशासन और सामाजिक समरसता का जीवंत महापर्व है। लगभग आठ शताब्दियों से चली आ रही यह परम्परा आज भी उतनी ही प्रासंगिक और प्रेरणादायी है, जितनी अपने प्रारम्भिक काल में थी। प्रतिवर्ष लाखों वारकरी सैकड़ों किलोमीटर की पदयात्रा कर भगवान श्री विठ्ठल-रुक्मिणी के दर्शन के लिए पंढरपुर पहुंचते हैं। इस यात्रा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें जाति, धर्म, भाषा, वर्ग और आर्थिक स्थिति का कोई भेदभाव नहीं होता। सभी एक-दूसरे को माऊली कहकर सम्बोधित करते हैं, जो प्रेम, सम्मान और समानता का प्रतीक है।

'वारी' का अर्थ है निश्चित समय पर श्रद्धा और नियमपूर्वक तीर्थयात्रा करना। भगवान श्री विठ्ठल की उपासना प्राचीन काल से होती रही है, परंतु 13 वीं शताब्दी में संत ज्ञानेश्वर महाराज, संत नामदेव महाराज, संत एकनाथ महाराज और संत तुकाराम महाराज ने वारकरी सम्प्रदाय को संगठित स्वरूप प्रदान किया। इन संतों ने भक्ति को कर्मकांडों की सीमाओं से निकालकर जन-जन तक पहुंचाया तथा नामस्मरण, सेवा, कीर्तन और समरसता को जीवन का आधार बनाया। उनके प्रयासों से वारी केवल धार्मिक आयोजन न रहकर आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जागरण का व्यापक आंदोलन बन गई। महाराष्ट्र में आषाढ़ी वारी का आरम्भ प्रत्येक वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में होता है। इस वारी की दो प्रमुख पालकियां संत ज्ञानेश्वर महाराज की आलंदी तथा संत तुकाराम महाराज की देहू से प्रस्थान करती हैं। संत ज्ञानेश्वर महाराज की पालकी आलंदी से निकलकर पुणे, सासवड, जेजुरी, वाल्हे, लोणंद, तरडगांव, फलटन, बरड, नातेपुते, मालशिरस, वेलापुर, बांडीशेगांव, पिराची कुरोली और वाखड़ी होते हुए पंढरपुर पहुंचती है। वहीं संत तुकाराम महाराज की पालकी देहू से आकुर्डी होते हुए पुणे पहुंचती है और वहां से संत ज्ञानेश्वर महाराज की पालकी के साथ उसी मार्ग पर आगे बढ़ते हुए पंढरपुर पहुंचती है। लगभग 250 से 300

आषाढ़ी वारी
भक्ति का महापर्व

किलोमीटर की यह पदयात्रा 18 से 21 दिनों में पूर्ण होती है। मार्ग में हजारों श्रद्धालु पालकियों पर पुष्पवर्षा, भजन-कीर्तन और जयघोष के साथ स्वागत करते हैं। जगह-जगह हरिपाठ, अभंग-कीर्तन, प्रवचन, महाप्रसाद, निःशुल्क चिकित्सा शिविर, पेयजल व्यवस्था तथा वारकरियों की सेवा के लिए अनेक सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाएं समर्पित भाव से कार्य करती हैं। आषाढ़ी एकादशी के दिन सभी पालकियां पंढरपुर विठोबा मंदिर पहुंचती हैं। परम्परा के अनुसार श्रद्धालु भगवान श्री विठ्ठल-रुक्मिणी के दर्शन से पूर्व पवित्र भीमा (चंद्रभागा) नदी में स्नान करते हैं और तत्पश्चात मंदिर में दर्शन कर अपनी वारी को पूर्णता प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त कार्तिकी, माघी और चैत्री एकादशी पर भी वारी निकाली जाती है, पर आषाढ़ी और कार्तिकी वारी का विशेष महत्व माना जाता है।

आज जिस पालकी परम्परा का भव्य स्वरूप दिखाई देता है, उसका औपचारिक प्रारम्भ सन् 1685 में संत तुकाराम महाराज के पुत्र नारायण महाराज ने किया। बाद में संत ज्ञानेश्वर महाराज सहित अन्य संतों की पालकियां भी इस परम्परा का हिस्सा बनीं। आज यह परम्परा महाराष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर और भारतीय संत परम्परा की अमूल्य विरासत मानी जाती है।

वारी का मूल आधार आध्यात्मिक साधना है। वारकरी सम्प्रदाय का विश्वास है कि ईश्वर तक पहुंचने का मार्ग आडम्बर नहीं बल्कि नामस्मरण, सेवा, विनम्रता और निष्काम भक्ति है। यात्रा के दौरान प्रतिदिन काकड़ आरती, हरिपाठ, अभंग-कीर्तन, भजन और संतवाणी का सामूहिक गायन होता है। ढोल, मृदंग, वीणा, झांझ और चिपलियों की मधुर ध्वनि के बीच ज्ञानोबा-तुकाराम, राम कृष्ण हरी और जय हरी विठ्ठल के जयघोष वातावरण को भक्तिमय बना देते हैं।

पंढरपुर वारी महाराष्ट्र की संत परम्परा का जीवंत स्वरूप है। संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम, संत नामदेव, संत एकनाथ, संत चोखामेला, संत जनाबाई, संत सावता माली, संत गोरा कुम्भार और संत नरहरी सोनार जैसे संतों ने अपने अभंगों और जीवन से समाज को प्रेम, समानता, सेवा और भक्ति का संदेश दिया। वारी उन्हीं आदर्शों को व्यवहार में उतारने का सशक्त माध्यम है।

वारी का सबसे प्रेरणादायक पक्ष उसका अनुशासन और सेवा-भाव है। हजारों दिंडियां निश्चित समय और सुव्यवस्थित व्यवस्था के साथ आगे बढ़ती हैं। वारकरी सामूहिक भोजन करते हैं, स्वच्छता बनाए रखते हैं, एक-दूसरे की सेवा करते हैं और मानव सेवा को ईश्वर सेवा मानते हैं। लाखों लोगों का बिना किसी भेदभाव के एक साथ चलना सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है।

महाराष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान के रूप में भी वारी का विशेष महत्व है। अभंग, कीर्तन, भारूड, लोकसंगीत और संत साहित्य की परम्परा इसी यात्रा के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवित रही है। गांव-गांव में पालकियों का स्वागत, संत साहित्य का पाठ और सामूहिक भक्ति महाराष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना को सशक्त बनाते हैं। आज वारी महाराष्ट्र की सीमाओं से निकलकर राष्ट्रीय और वैश्विक पहचान प्राप्त कर चुकी है। कर्नाटक, गोवा, तेलंगाना, गुजरात, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ सहित अनेक राज्यों में वारकरी परम्परा से प्रेरित होकर पालकी यात्राएं, हरिपाठ, नामस्मरण और विठ्ठल भक्ति के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, संयुक्त अरब अमीरात, सिंगापुर और न्यूजीलैंड सहित अनेक देशों में बसे मराठी समाज द्वारा भी आषाढ़ी और कार्तिकी एकादशी पर विठ्ठल-रुक्मिणी पूजन, पालकी यात्रा और अभंग-कीर्तन का आयोजन किया जाता है। इससे भारतीय संत परम्परा और वारी की वैश्विक पहचान निरंतर सशक्त हो रही है। ***

50+ YEARS OF MOMENTUM
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
बदलत्या हवामानात स्वतःची काळजी घ्या... आणि कल्याण जनता बँकिंग ॲप द्वारे तुमची सर्व बँकिंग कामे करा - सुरक्षितपणे, सहज आणि घरबसल्या.
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
TOLL FREE: 1800 233 1919 kalyanjanata.bank.in KJSBank

भक्ति, समर्पण व समरसता का जीवंत उत्सव

वारी हमें केवल पंढरपुर तक पहुंचने का मार्ग नहीं दिखाती, बल्कि एक संवेदनशील, समरस और मानवीय समाज की दिशा भी प्रदान करती है।

सेवा कार्य

लवकुश तिवारी

भारत की सांस्कृतिक परम्परा में अनेक ऐसे पर्व और यात्राएं हैं जो केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने वाले जीवंत आंदोलन हैं। महाराष्ट्र की आषाढ़ी वारी ऐसी ही एक अद्भुत परम्परा है, जो लगभग 800 वर्षों से निरंतर चल रही है। संत ज्ञानेश्वर महाराज की पालखी आलंदी से तथा संत तुकाराम महाराज की पालखी देहू से पंढरपुर स्थित भगवान विठ्ठल के दर्शन के लिए प्रस्थान करती है। इस यात्रा में लाखों वारकरी सैकड़ों किलोमीटर पैदल चलते हैं। किंतु वारी की सबसे बड़ी विशेषता केवल यह पदयात्रा नहीं, बल्कि उसके साथ चलने वाली सेवा की संस्कृति है। यही सेवा वारी को एक धार्मिक आयोजन से आगे बढ़ाकर सामाजिक समरसता, मानवता और राष्ट्रभावना का विराट उत्सव बना देती है।

भारतीय संस्कृति में सेवा को ईश्वर की उपासना का सर्वोच्च माध्यम माना गया है। संत परम्परा ने सदैव यह संदेश दिया कि मानव की सेवा ही माधव की सेवा है। वारी में यह विचार व्यवहार के रूप में दिखाई देता है। यहां कोई व्यक्ति प्रसिद्धि या प्रतिफल की इच्छा से सेवा नहीं करता, बल्कि इसे अपना सौभाग्य मानकर करता है। हजारों स्वयंसेवक बिना किसी भेदभाव के वारकरियों की सहायता में दिन-रात जुटे रहते हैं। उनके लिए प्रत्येक वारकरी स्वयं विठ्ठल का स्वरूप होता है।

वारी के दौरान सबसे अधिक आवश्यक

सेवा भोजन और पेयजल की होती है। यात्रा के मार्ग में अनेक सामाजिक संस्थाएं, धार्मिक संगठन, उद्योग समूह, स्थानीय नागरिक और ग्रामवासी विशाल अन्नछत्र संचालित करते हैं। यहां जाति, धर्म, भाषा, आर्थिक स्थिति या सामाजिक पहचान का कोई प्रश्न नहीं होता। सभी एक पंक्ति में बैठकर प्रेमपूर्वक भोजन ग्रहण करते हैं। यह दृश्य भारतीय संस्कृति के सर्वे भवन्तु सुखिनः के आदर्श को साकार करता है।

भोजन के साथ-साथ स्वास्थ्य सेवाओं का भी विशेष महत्व है। लम्बी पदयात्रा के कारण अनेक वारकरियों को थकान, बुखार, पैरों में छाले, निर्जलीकरण अथवा अन्य स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे समय चिकित्सक, नर्स, पैरामेडिकल स्टाफ तथा स्वयंसेवी संस्थाएं निःशुल्क चिकित्सा शिविर संचालित करती हैं। प्राथमिक उपचार, दवाईयां, एम्बुलेंस सेवा और आपातकालीन चिकित्सा की व्यवस्था निरंतर उपलब्ध रहती हैं। अनेक स्थानों पर वारकरियों के पैरों की मालिश, घावों की सफाई और पट्टी जैसी सेवाएं भी अत्यंत श्रद्धा के साथ की जाती हैं। यह सेवा करुणा और संवेदनशीलता का अनुपम उदाहरण है। इसके अतिरिक्त विश्राम स्थलों की व्यवस्था, स्वच्छ पेयजल, स्नान एवं शौचालय, महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष सुविधाएं, खोए हुए लोगों को उनके परिजनों से मिलाना, यातायात व्यवस्था में सहयोग, स्वच्छता अभियान तथा पर्यावरण संरक्षण जैसे अनेक सेवा कार्य वारी की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अनेक युवा संगठन यात्रा मार्ग पर प्लास्टिक मुक्त अभियान चलाते हैं और स्वच्छता बनाए रखने के लिए स्वयं श्रमदान करते हैं। यह दर्शाता है कि सेवा केवल व्यक्ति तक सीमित नहीं, बल्कि प्रकृति और समाज के प्रति भी उत्तरदायित्व है।

वारी का सबसे प्रेरक पक्ष इसकी सामाजिक समरसता है। यहां जाति, वर्ग, भाषा, क्षेत्र, सम्पत्ति और पद का कोई भेद नहीं रहता। किसान, मजदूर, व्यापारी, विद्यार्थी, अधिकारी, डॉक्टर, उद्योगपति और साधारण नागरिक सभी एक साथ चलते हैं, एक साथ भोजन करते हैं और एक-दूसरे की सेवा करते हैं। यही संतों की उस शिक्षा का प्रत्यक्ष स्वरूप है जिसमें सभी मनुष्यों को समान माना गया है। संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम, संत नामदेव, संत चोखामेला, संत सावता माली और अन्य संतों ने जिस समतामूलक समाज की कल्पना की थी, उसका सजीव दर्शन वारी में होता है।

वारी केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक शिक्षा का भी माध्यम है। सेवा कार्यों में बड़ी संख्या में युवाओं की भागीदारी उन्हें अनुशासन, सहयोग, संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व का पाठ पढ़ाती है। वे सीखते हैं कि समाज केवल अधिकारों से नहीं, बल्कि कर्तव्यों और सेवा भाव से भी चलता है। यही अनुभव आगे चलकर उन्हें जागरूक और उत्तरदायी नागरिक बनने की प्रेरणा देता है। आज जब समाज अनेक प्रकार के सामाजिक, आर्थिक और वैचारिक विभाजनों से जूझ रहा है, तब वारी का संदेश और भी प्रासंगिक हो जाता है। प्रतिस्पर्धा, स्वार्थ और भौतिकता के इस दौर में निस्वार्थ सेवा का यह विशाल आयोजन मानवता के प्रति विश्वास को मजबूत करता है। वारी हमें सिखाती है कि किसी भी समाज की वास्तविक शक्ति उसके संसाधनों में नहीं, बल्कि उसके सेवा संस्कार में निहित होती है।

महाराष्ट्र शासन, स्थानीय प्रशासन, पुलिस, स्वास्थ्य विभाग, नगरपालिकाएं तथा हजारों स्वयंसेवी संगठन मिलकर जिस प्रकार समन्वित रूप से सेवा कार्य करते हैं, वह सुशासन और जनसहभागिता का उत्कृष्ट उदाहरण भी प्रस्तुत करता है। लाखों लोगों की सुरक्षित यात्रा केवल सरकारी व्यवस्था से संभव नहीं होती; इसमें समाज की सहभागिता और सेवा भावना ही सबसे बड़ी शक्ति बनती है।

वास्तव में वारी भारत की उस सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक है जिसमें धर्म केवल पूजा-पद्धति नहीं, बल्कि लोकमंगल का माध्यम है। यहां सेवा ही साधना है, समर्पण ही भक्ति है और मानवता ही ईश्वर तक पहुंचने का मार्ग है। वारी के सेवा कार्य हमें यह संदेश देते हैं कि जब समाज बिना किसी भेदभाव के एक-दूसरे के दुःख को अपना दुःख मानकर आगे बढ़ता है, तभी सच्चे अर्थों में सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता का निर्माण होता है। ***

भक्ति और शक्ति की अक्षुण्ण परम्परा

डॉ. वेदप्रकाश दुबे

आषाढ़ी वारी

आषाढ़ी वारी भारतीय संस्कृति की उस जीवन-दृष्टि का अनुपम उदाहरण है, जिसमें भक्ति और शक्ति का अद्वितीय संतुलन दिखाई देता है। वारकरी अपनी भक्ति, समरसता और लोकमंगल की भावना से समाज के अंतर्मन को आलोकित करते हैं, जबकि धारकरी अपने अनुशासन, सेवा और संरक्षण के माध्यम से उस आध्यात्मिक विरासत की रक्षा करते हैं।

महाराष्ट्र की पावन धरती संतों, समाज-सुधारकों और वीरों की गौरवशाली परम्परा की संवाहक रही है। इस भूमि की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना का सबसे उज्ज्वल प्रतीक आषाढ़ी वारी है। प्रतिवर्ष आषाढ़ शुक्ल एकादशी (देवशयनी एकादशी) के अवसर पर पंढरपुर स्थित भगवान विठ्ठल-माता रुक्मिणी के दर्शन के लिए उमड़ने वाला जनसमुदाय केवल एक धार्मिक यात्रा का सहभागी नहीं होता बल्कि वह समरसता, लोकमंगल, श्रद्धा और सांस्कृतिक एकात्मता का जीवंत उत्सव रचता है। यह वारी केवल आस्था की यात्रा नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति की उस जीवन-दृष्टि का मूर्त रूप है जिसमें अध्यात्म, समानता, सेवा और अनुशासन का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। इस वारी की सबसे विशिष्ट विशेषता यह है कि इसमें केवल वारकरी अर्थात् भक्ति-पथ के साधक ही नहीं चलते बल्कि उनकी सुरक्षा, अनुशासन और परम्परा के संरक्षण में समर्पित धारकरी भी समान भाव से सहभागी होते हैं। इस प्रकार वारी भक्ति और शक्ति, करुणा और पराक्रम, मृदंग और शस्त्र, संतत्व और साहस का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करती है। यही कारण है कि आषाढ़ी वारी केवल एक धार्मिक आयोजन न होकर भारतीय सांस्कृतिक चेतना का सजीव प्रतीक बन गई है।

'वारी' का अर्थ है- नियत समय पर श्रद्धापूर्वक किसी पवित्र

स्थल की यात्रा करना। पंढरपुर की वारी की परम्परा लगभग 8 शताब्दियों से अविरल प्रवाहित हो रही है। संत ज्ञानेश्वर महाराज और संत तुकाराम महाराज ने इसे जन-आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया। प्रतिवर्ष संत ज्ञानेश्वर महाराज की पादुकाएं आलंदी से तथा संत तुकाराम महाराज की पादुकाएं देहू से पंढरपुर के लिए प्रस्थान करती हैं। लगभग 15 से 21 दिनों तक चलने वाली यह पदयात्रा सैकड़ों किलोमीटर की दूरी तय करती है। इस यात्रा में जाति, वर्ग, वर्ण, धन और पद के सभी भेद विलीन हो जाते हैं तथा प्रत्येक यात्री केवल विठ्ठल-भक्ति के रंग में रंगा हुआ एक 'माउली' बन जाता है।

'वारकरी' शब्द 'वारी' और 'करी' (करने वाला) से मिलकर बना है। वारकरी सम्प्रदाय विठ्ठल-भक्ति, अहिंसा, सदाचार, नैतिकता और सामाजिक समरसता पर आधारित एक सशक्त आध्यात्मिक परम्परा है। इस परम्परा ने समाज में व्याप्त ऊंच-नीच, जातिगत भेदभाव और सामाजिक विषमताओं को चुनौती दी। वारी में सभी श्रद्धालु समान भाव से साथ चलते हैं, साथ बैठकर भोजन करते हैं और एक-दूसरे के चरणस्पर्श कर विनम्रता एवं समानता का संदेश देते हैं। यहां व्यक्ति की पहचान उसके सामाजिक पद से नहीं बल्कि उसकी भक्ति से होती है। यही कारण है कि वारी भारतीय लोकतांत्रिक और मानवीय मूल्यों की भी एक सशक्त अभिव्यक्ति मानी जाती है।

वारकरी का जीवन अनुशासन, संयम और सात्विकता का प्रतीक माना जाता है। वे तुलसी की माला धारण करते हैं, गोपीचंदन का तिलक लगाते हैं तथा करताल और झांझ के साथ 'विठ्ठल' नाम का संकीर्तन करते हुए यात्रा करते हैं। मांस, मदिरा तथा अनैतिक आचरण से दूर रहकर वे शुद्ध और संयमित जीवन का आदर्श प्रस्तुत करते हैं। ज्ञानबा-तुकाराम तथा पुंडलिक वरदा हरि विठ्ठल का अखंड जयघोष उनकी आध्यात्मिक साधना का अभिन्न अंग है। उनके लिए वारी केवल पैरों की यात्रा नहीं बल्कि मन, वचन और कर्म की पवित्र साधना है। वारी केवल पदयात्रा नहीं बल्कि लोकशिक्षा का सशक्त माध्यम भी है। कीर्तन, अभंग, भारुड़, रिंगण तथा फुगड़ी जैसी लोकपरम्पराओं के माध्यम से समाज को नैतिकता, समरसता और आध्यात्मिकता का संदेश दिया जाता है। शारीरिक श्रम और कठिन यात्रा के बाद भी वारकरियों का उत्साह और आनंद इस बात का प्रमाण है कि आध्यात्मिक ऊर्जा मनुष्य को असाधारण शक्ति प्रदान करती है। इस यात्रा में भक्ति केवल व्यक्तिगत साधना न रहकर सामूहिक चेतना का उत्सव बन जाती है।

प्रायः यह प्रश्न उठता है कि शांतिपूर्ण और भक्तिमय वारी में शस्त्रधारी धारकरियों की आवश्यकता क्यों रही? इसका उत्तर इतिहास और सामाजिक परिस्थितियों में निहित है। मध्यकालीन समय में विशाल धार्मिक यात्राएं अनेक प्रकार के संकटों से घिरी रहती थीं। मार्ग में डाकुओं, लुटेरों अथवा अन्य विघ्नों की आशंका बनी रहती थी। ऐसी परिस्थितियों में धारकरी वारी के आगे-पीछे चलकर यात्रियों तथा पालकी की सुरक्षा सुनिश्चित करते थे। उनका उद्देश्य श्रद्धालुओं को निर्भय वातावरण उपलब्ध कराना था ताकि भक्ति की यात्रा बिना किसी व्यवधान के पूर्ण हो सके।

आज सुरक्षा की औपचारिक जिम्मेदारी शासन-प्रशासन के पास है, फिर भी धारकरी परम्परा आज भी जीवित है। पारम्परिक वेशभूषा, भगवा ध्वज, लाठी, तलवार और ढाल के साथ वे अनुशासन, व्यवस्था और सेवा का दायित्व निभाते हैं। भीड़-नियंत्रण, पालकी की सुरक्षा तथा आपातकालीन परिस्थितियों में सहायता प्रदान करना उनकी प्रमुख भूमिकाओं में सम्मिलित है। वे केवल परम्परा के प्रतीक नहीं बल्कि सेवा और उत्तरदायित्व की जीवंत अभिव्यक्ति हैं। धारकरी केवल शस्त्रधारी नहीं बल्कि सेवाभाव से ओतप्रोत स्वयंसेवक भी हैं। वे वारी के अनुशासन का पालन करते हुए वृद्ध, अस्वस्थ अथवा थके हुए यात्रियों की सहायता करते हैं। उनका समर्पण यह सिद्ध करता है कि शक्ति का सर्वोच्च स्वरूप सेवा और संरक्षण में निहित है। भारतीय संस्कृति में शक्ति का उद्देश्य विजय या प्रभुत्व नहीं बल्कि धर्म, समाज और मानवीय मूल्यों की रक्षा माना गया है। धारकरी इसी आदर्श को अपने आचरण से साकार करते हैं।

वारकरी और धारकरी की यह संयुक्त परम्परा विश्व को एक महत्वपूर्ण संदेश देती है कि केवल आध्यात्मिक साधना से समाज की समग्र सुरक्षा सम्भव नहीं और केवल शस्त्रबल से स्थाई शांति स्थापित नहीं की जा सकती। समाज के संतुलित विकास के लिए आंतरिक पवित्रता अर्थात भक्ति तथा बाह्य संरक्षण अर्थात शक्ति- दोनों का समन्वय अनिवार्य है। ***

गुरु बगीचे की एक माली की तरह होता है, जो अपने शिष्य रूपी पौधों के अवगुणों को काट-छांटकर संस्कार रूपी खाद व पानी से सींचता है और एक सुंदर व सुगंधित पुष्प में रूपांतरित करता है।

गुरु पूर्णिमा

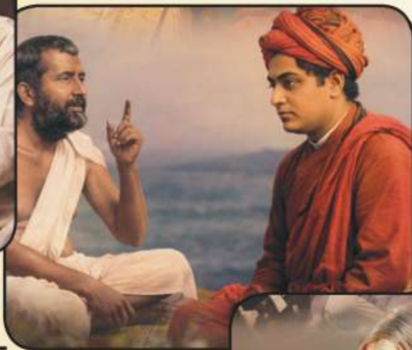

ज्ञान व संस्कार से सींचते गुरु

भारतीय सनातन संस्कृति का एक महान गुण है जहां गुरु का स्थान सर्वोच्च माना गया है। शास्त्रों में कहा गया है-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरु केवल ज्ञान देने वाला व्यक्ति नहीं होता बल्कि वह अपने शिष्य के व्यक्तित्व को गढ़ने वाला शिल्पकार होता है। जिस प्रकार एक मूर्तिकार साधारण पत्थर को तराशकर उसे दिव्य प्रतिमा का स्वरूप देता है, उसी प्रकार गुरु अपने शिष्य के भीतर छिपी प्रतिभा को पहचानकर उसे निखारता है, दिशा देता है और जीवन के उच्चतम शिखर तक पहुंचने योग्य बनाता है।

गुरु पूर्णिमा का यह पवित्र दिवस हमें यही संदेश देती है कि जीवन में जो भी उपलब्धियां हमें प्राप्त होती हैं, उनके पीछे किसी न किसी गुरु का मौन, प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष योगदान अवश्य होता है। शाश्वत सत्य है कि माता-पिता हमें जन्म देते हैं, पर गुरु हमें जीवन जीने की कला सिखाते हैं। वे केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं देते बल्कि अनुशासन, धैर्य, परिश्रम, नैतिकता और संघर्ष का पाठ भी पढ़ाते हैं।

क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं। उनके गुरु रमाकांत आचरेकर ने बचपन में ही सचिन की प्रतिभा को पहचान लिया था। उन्होंने सचिन को कठोर अभ्यास कराया, अनुशासन सिखाया और उनकी तकनीक को लगातार निखारा। कहा जाता है कि यदि सचिन नेट अभ्यास में अच्छा खेलते थे तो आचरेकर स्टम्प पर एक सिक्का रख देते थे, जिसे आउट न होने पर सचिन को पुरस्कार के रूप में मिलता था। हालांकि ऐसा नहीं कि इस महान उपलब्धि के पीछे केवल गुरु का ही योगदान हो, शिष्य की पात्रता और योग्यता भी बहुत बड़ी भूमिका निभाती है क्योंकि वहीं दूसरी ओर विनोद काम्बली जैसे योग्य क्रिकेटर भी उन्हीं गुरु के स्कूल के छात्र रहे, किंतु समर्पण, निष्ठा और अनुशासन के अभाव में वे शिखर से नीचे आ गिरे, जबकि सचिन की खेल निष्ठा, शालिनता व समपर्ण ने उन्हें विश्व क्रिकेट का महानायक बना दिया। सचिन स्वयं स्वीकार करते हैं कि उनकी सफलता का बड़ा श्रेय उनके गुरु को जाता है।

डॉ. राकेश भट्ट

यह उदाहरण बताता है कि गुरु का मार्गदर्शन तभी फलदायी होता है जब शिष्य भी समर्पण, विनम्रता और निरंतर सीखने की भावना बनाए रखे। गुरु दिशा दिखा सकता है, पर उस दिशा में चलना शिष्य का दायित्व होता है।

भारतीय नृत्य जगत में भी गुरु-शिष्य परम्परा का अद्भुत उदाहरण देखने को मिलता है। प्रसिद्ध नृत्याचार्य गोपीकृष्ण ने अपनी शिष्या सरोज खान को कला की बारीकियों से परिचित कराया। सरोज खान ने अपने गुरु से सीखी हुई साधना, अनुशासन और अभिव्यक्ति को जीवन भर अपनाया। आगे चलकर वे भारतीय सिनेमा की सबसे प्रतिष्ठित कोरियोग्राफरों में गिनी जाने लगीं। उनके नृत्य-निर्देशन ने अनेक कलाकारों को नई पहचान दिलाई। यह गुरु की शिक्षा और शिष्या की अथक साधना का श्रेष्ठ परिणाम था। भारतीय शास्त्रीय संगीत में पंडित भीमसेन जोशी और उनके गुरु सवाई गंधर्व का सम्बंध भी अत्यंत प्रेरणादायक है। गुरु के कठोर प्रशिक्षण और शिष्य की अथक साधना ने भारतीय संगीत को एक महान गायक दिया। इसी प्रकार पंडित रविशंकर ने अपने गुरु उस्ताद अलाउद्दीन खां से संगीत की ऐसी शिक्षा प्राप्त की कि उन्होंने भारतीय सितार को विश्वभर में सम्मान दिलाया। विज्ञान के क्षेत्र में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अधिकांश अपने विद्यालय के शिक्षक शिव सुब्रमण्यम अय्यर का उल्लेख करते थे। उन्होंने बालक कलाम के मन में विज्ञान के प्रति जिज्ञासा जगाई और बड़े सपने देखने की प्रेरणा दी। वही प्रेरणा आगे चलकर उन्हें भारत का मिसाइल मैन और देश का राष्ट्रपति बनने तक ले गई।

स्वामी विवेकानंद और रामकृष्ण परमहंस का सम्बंध गुरु-शिष्य परम्परा का अमर उदाहरण है। रामकृष्ण परमहंस ने युवा नरेंद्र के भीतर छिपे आध्यात्मिक तेज को पहचाना और उसे विश्वकल्याण की दिशा दी। परिणामस्वरूप विवेकानंद ने भारतीय संस्कृति का संदेश पूरे विश्व में पहुंचाया। महाभारत में अर्जुन और द्रोणाचार्य का सम्बंध भी गुरु की प्रेरणा और शिष्य की एकाग्रता का उदाहरण है। द्रोणाचार्य ने अर्जुन को केवल धनुर्विद्या ही नहीं सिखाई बल्कि लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पण का महत्व भी समझाया। इसी कारण अर्जुन महान धनुर्धर बने।

इन सभी उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि गुरु केवल प्रतिभा नहीं गढ़ता बल्कि चरित्र भी बनाता है, पर यह भी उतना ही सत्य है कि हर शिष्य समान परिणाम प्राप्त नहीं करता। कुछ शिष्य गुरु की शिक्षा को जीवन का आधार बना लेते हैं और नई ऊंचाइयां छूते हैं, जबकि कुछ लोग प्रतिभाशाली होते हुए भी अनुशासन और निरंतर अभ्यास के अभाव में दिशा खो बैठते हैं। इसलिए गुरु और शिष्य दोनों की भूमिका समान रूप से महत्वपूर्ण है।

आज के समय में शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का माध्यम नहीं रह गई है। ऐसे दौर में गुरु का दायित्व और भी बढ़ जाता है कि वह विद्यार्थियों को केवल रोजगार योग्य नहीं बल्कि संस्कारवान, संवेदनशील बनाए।

***

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

पंजीयन करें

सेवा विवेक ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।

सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।

सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।

सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।

इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।

आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

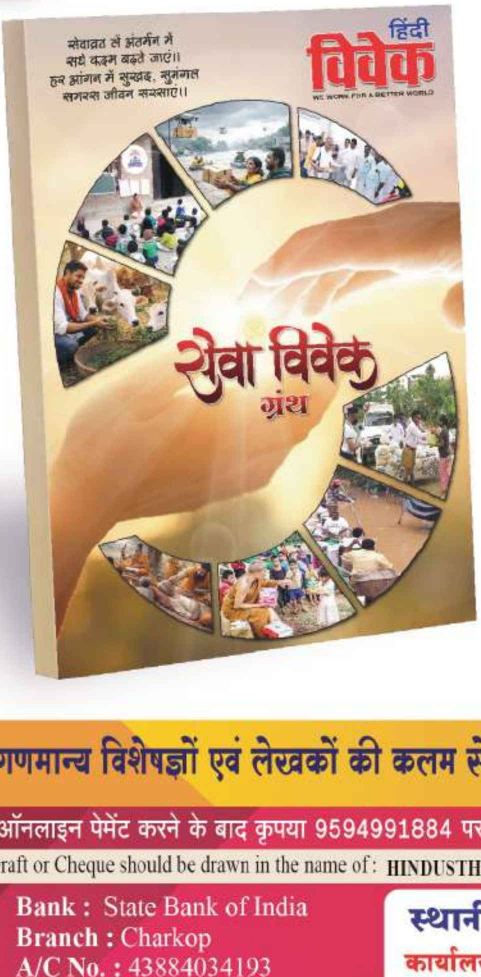

प्रकाशन पूर्व मूल्य
600/-

ग्रंथ का मूल्य
₹700/-

देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of: **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK**

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

नीट पेपर लीक 2026

आक्रोश, हाइजैकिंग और लोकतंत्र की परीक्षा

नीट पेपर लीक का मामला ऐसा भड़का कि उसकी चिंगारियां पूरे देश में छिटकने लगीं और उसकी तपती आंच में कई विपक्षी पार्टियां राजनीतिक रोटियां सेंकने लगीं।

आशीष कुमार 'अंशु'

भारत में शिक्षा व्यवस्था की सबसे बड़ी परीक्षा नीट-यूजी 2026 बन गई है। मई 2026 में आयोजित इस परीक्षा में पेपर लीक के आरोपों ने पूरे देश को हिला दिया। लगभग 23 लाख छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया था, जिनमें से कई परिवारों ने घर-खेत बेचकर या कर्ज लेकर तैयारी कराई थी। 3 मई को परीक्षा हुई, लेकिन जल्द ही राजस्थान के सिकर जैसे कोचिंग हब से गेस पेपर वायरल होने के समाचार आए, इसमें 120 से अधिक प्रश्न असली पेपर से मैच करते पाए गए। एनटीए ने 12 मई को परीक्षा रद्द कर दी और दोबारा परीक्षा 21 जून को कराई गई। सीबीआई जांच जारी है, कई गिरफ्तारियां हुई हैं।

इस घटना ने युवाओं के आक्रोश को सड़कों पर उतार दिया। दिल्ली के जंतर-मंतर पर कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) नामक आंदोलन शुरू हुआ, जिसका नेतृत्व अभिजीत दीपके ने किया। जल्द ही लद्दाखी एनजीओकर्मी सोनम वांगचुक 28 जून से अनशन पर बैठ गए। उनका 25 दिन लम्बा अनशन पूरे आंदोलन को राष्ट्रीय मुद्दा बना गया। वांगचुक ने शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के त्यागपत्र, पेपर लीक पीड़ित छात्रों के परिवारों को मुआवजा और एनटीए में सुधार की मांग की।

20 जुलाई 2026 को चलो संसद मार्च का आह्वान किया गया। हजारों

युवा जंतर-मंतर से संसद की ओर बढ़े। पुलिस ने बैरिकेड लगाए, लेकिन भीड़ ने तोड़ने का प्रयास किया। पथराव हुआ, लाठीचार्ज और आंसू गैस का प्रयोग हुआ। दिल्ली पुलिस के अनुसार 60 प्रदर्शनकारी और 118 जवान घायल हुए। 10 एफआईआर दर्ज हुईं। दिल्ली उच्च न्यायालय ने पुलिस कार्रवाई पर याचिकाओं पर सुनवाई की और सीसीटीवी फुटेज संरक्षित रखने का आदेश दिया। विपक्ष ने अत्यधिक बल प्रयोग बताया, जबकि सरकार ने इसे संगठित अराजकता कहा।

आंदोलन की जड़ें और 'कॉकरोच' नाम

सीजेपी नाम विवादास्पद रहा। यह नाम सर्वोच्च न्यायालय के सीजेआई जस्टिस सूर्यकांत की एक पुरानी टिप्पणी से लिया गया प्रतीत होता है, जो फर्जी डिग्री वाले वकीलों पर थी। प्रदर्शनकारियों ने इसे युवाओं पर कॉकरोच कहकर अपमान का प्रतीक बनाया। आंदोलन शुरू में नीट लीक पर केंद्रित था, लेकिन मंच पर राजनीतिक नारे (मोदी हटाओ, राम अपमान, हिंदुत्व विरोध) बढ़ते गए। एआइएसएफ, एसएफआई जैसे वामपंथी संगठन, आप, कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल सक्रिय हुए। सोशल मीडिया पर पर पीआर कैम्पेन चला, विदेशी फंडिंग के आरोप भी लगे।

वांगचुक ने 22 जुलाई को अनशन समाप्त करने की इच्छा जताई, बशर्ते सरकार प्रदर्शनकारियों पर प्रतिशोधी कार्रवाई न करे। बीजेपी मंत्री जेपी नड्डा और जितेंद्र सिंह ने उनसे अस्पताल में भेंट की। सरकार ने संसद में नीट चर्चा का प्रस्ताव स्वीकार किया, लेकिन प्रधान के त्यागपत्र देने से मना कर दिया।

राजनीतिक अवसरवादिता

आंदोलन की सबसे बड़ी आलोचना राजनीतिक हाइजैकिंग की रही। विपक्षी नेता मंच पर पहुंचे, लेकिन उनके बच्चे विदेशी यूनिवर्सिटी में पढ़ रहे हैं। राहुल गांधी युवा मुद्दों पर भाषण देते हैं, लेकिन परिवार की अगली पीढ़ी सड़क पर नहीं उतरती। अरविंद केजरीवाल की बेटी या मनीष सिसोदिया के बेटे का प्रदर्शन में सक्रिय रोल नहीं दिखा। नसीरुद्दीन शाह जैसे सेलिब्रिटी आए, लेकिन अपने बच्चों को आगे नहीं किया। यह लाठी पब्लिक खाएगी, नेता वोट बनाएगा वाला पैटर्न पुराना है। वह इस आंदोलन में भी देखने को मिला।

सरकार पर भी प्रश्न हैं। बीजेपी ने पेपर लीक पर फास्ट-ट्रैक कोर्ट्स की घोषणा की है, जो सकारात्मक है, लेकिन आंदोलनों को 'अनसुना' करने की प्रवृत्ति (शुतुरमुर्ग नीति) युवाओं के गुस्से को बढ़ाती है। राम मंदिर जैसे सांस्कृतिक मुद्दों पर सफलता मिली, लेकिन रोजमर्रा की समस्याएं- नीट, बेरोजगारी, किसान मुद्दे पर ठोस, दीर्घकालिक समाधान नहीं दिखे।

भारत दुनिया का सबसे युवा राष्ट्र है- 65% जनसंख्या 35 वर्ष से कम। एक ओर चंद्रयान, स्टार्टअप, एआई में सफलता, दूसरी ओर परीक्षा घोटालों से भटकाव। स्वामी विवेकानंद ने युवाओं से चरित्र, आत्मबल और राष्ट्रभक्ति की अपेक्षा की थी। महात्मा गांधी अहिंसा को वीरों का हथियार मानते थे, लेकिन 20 जुलाई को हुए आंदोलन के दृश्य-पत्थरबाजी, सम्पत्ति क्षति- इन आदर्शों से दूर थे।

सोशल मीडिया ने आंदोलन को तेज किया, लेकिन अफवाहें और भड़काऊ वीडियो भी फैले। कई वीडियो की पुष्टि नहीं हुई, फिर भी वायरल हुए। यह भीड़तंत्र बनाम लोकतांत्रिक विरोध की बहस को फिर जिंदा करता है।

तथ्य बनाम षडयंत्र

कुछ विश्लेषक इसे विदेशी षडयंत्र या रिजीम चेंज प्रयास बता रहे हैं- एफसीआरए, एनजीओ, डीप स्टेट की चर्चा। वास्तव में विपक्षी पार्टियां और कुछ संगठन मुद्दे का राजनीतिक लाभ उठा रहे हैं, लेकिन हर आंदोलन को षड्यंत्र कहना भी अतिरंजना है। गुस्सा सही है, जब संवेदना सही जगह नहीं पहुंचती तो आक्रोश गलत हाथों में जा सकता है।

पुलिस कार्रवाई पर प्रश्न वैध हैं, लेकिन प्रदर्शनकारियों पर पथराव और बैरिकेड तोड़ने के आरोप भी हैं। दोनों पक्षों को जवाबदेही तय करनी होगी।

आगे का रास्ता

नीट जैसी परीक्षाओं का केंद्रीकरण लाभदायक था, लेकिन एनटीए की क्षमता पर प्रश्न हैं। विकल्प- राज्य स्तर पर परीक्षाएं या बड़े सुधार पर बहस आवश्यक है। सरकार को पारदर्शिता बढ़ानी चाहिए: रीयल-टाइम मॉनिटरिंग, एआई प्रूफिंग, कड़ी सजा का प्रावधान। परीक्षा को सुरक्षित बनाने में सहायक हो सकता है। युवाओं को सांविधानिक रास्ते अपनाने चाहिए- शांतिपूर्ण प्रदर्शन, याचिकाएं। हिंसा लोकतंत्र को कमजोर करती है। विपक्ष को भी सत्ता में रहते हुए सुधारों का श्रेय लेने की आदत छोड़नी चाहिए।

***

मानसून सत्र

संसद का मानसून सत्र 20 जुलाई से आगामी 13 अगस्त तक चलेगा। मानसून सत्र के पहले दिन ही विपक्षी दलों ने राम मंदिर दान चोरी और नीट का मुद्दा उठाकर हंगामा किया और संसद की कार्यवाही में व्यवधान डाला।

सत्र की शुरुआत हंगामे के साथ

संसद का मानसून सत्र 20 जुलाई 2026 से शुरू हुआ है। पिछले 4 दिन से विपक्षी दल राम मंदिर दान चोरी और नीट का मुद्दा उठाकर सरकार के विरुद्ध हंगामा कर रहे हैं। जिसके कारण दोनों सदनों में कामकाज सुचारु तरीके से शुरू नहीं हो पाया है। संसद लोकतंत्र का सर्वोच्च मंच है, जहां सरकार और विपक्ष के बीच जनहित के मुद्दों पर गम्भीर बहस के माध्यम से जवाबदेही सुनिश्चित की जाती है। वर्तमान मानसून सत्र में नीट पेपर लीक और परीक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता का मुद्दा प्रमुख राजनीतिक विषय बन गया है। यह विषय करोड़ों छात्रों और उनके परिवारों से जुड़ा होने के कारण स्वाभाविक रूप से संसद में व्यापक चर्चा की मांग करता है, किंतु इस मुद्दे पर सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच बनी राजनीतिक खींचतान ने संसदीय कार्यवाही को लगातार प्रभावित किया है। सरकार की ओर से संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने स्पष्ट किया कि सरकार नीट पेपर लीक मामले पर चर्चा के लिए तैयार है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने भी सभी दलों को चर्चा के एजेंडे पर सहमति बनाने का आग्रह किया। सरकार का कहना है कि वह बिना किसी पूर्व शर्त के नियमों के अंतर्गत बहस कराने को तैयार है ताकि सभी पक्ष अपनी बात रख सकें और सरकार भी अपने कदमों का स्पष्टीकरण दे सके।

दूसरी ओर विपक्ष का तर्क है कि परीक्षा प्रणाली में आई गम्भीर विफलताओं की नैतिक जिम्मेदारी तय होना आवश्यक है। कांग्रेस और उसके सहयोगी दल केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के त्यागपत्र की मांग पर अड़े हैं और उनका कहना है कि इसी के बाद सार्थक चर्चा सम्भव होगी।

कांग्रेस पार्टी के लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी, राज्यसभा में नेता विपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के नेतृत्व में स्थगन प्रस्ताव के अंतर्गत चर्चा की मांग की गई है। इसके साथ ही कांग्रेस अन्य विपक्षी नेताओं के साथ संसद परिसर में हर दिन विरोध प्रदर्शन करके छात्रों के पक्ष में आवाज उठा रही है। स्पष्ट है राजनीति मुद्दे पर हावी हो चुकी है। यहां सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या किसी मंत्री के त्यागपत्र को चर्चा की पूर्व शर्त बनाना संसदीय परम्पराओं के अनुरूप है? लोकतांत्रिक व्यवस्था में त्यागपत्र की मांग करना विपक्ष का अधिकार है, लेकिन यदि उसी मांग के कारण संसद में चर्चा ही न हो पाए तो सबसे अधिक हानि उसी मुद्दे का होता है जिसे विपक्ष उठाना चाहता है। बहस के दौरान सरकार से कठिन प्रश्न पूछे जा सकते हैं, उत्तर मांगे जा सकते हैं और आवश्यक होने पर आगे की कार्रवाई के लिए दबाव भी बनाया जा सकता है। इसके विपरीत लगातार हंगामे के कारण न तो सरकार का पक्ष विस्तार से सामने आता है और न ही विपक्ष अपने आरोपों को संसदीय रिकॉर्ड का हिस्सा बना पाता है।

यदि परीक्षा प्रणाली में खामियां सामने आई हैं तो उनके समाधान, दोषियों पर कार्रवाई और भविष्य में ऐसी घटनाओं की रोकथाम के लिए स्पष्ट रोडमैप प्रस्तुत करना भी सरकार का दायित्व है। प्रधान मंत्री द्वारा पेपर लीक के दोषियों को दंडित करके जल्द से सजा सुनिश्चित करने हेतु फास्ट ट्रैक कोर्ट के गठन की घोषणा इसी दायित्व का संकेत है। अंततः लोकतंत्र की शक्ति संवाद में निहित है, न कि गतिरोध में। विपक्ष का दायित्व है कि वह सरकार को कठघरे में खड़ा करे, जबकि सरकार का दायित्व है कि वह जवाबदेही निभाए। यदि दोनों पक्ष राजनीतिक शर्तों से ऊपर उठकर संसद में गम्भीर बहस को प्राथमिकता दें तो न केवल छात्रों के हित सुरक्षित होंगे बल्कि लोकतांत्रिक संस्थाओं में जनता का विश्वास भी और अधिक मजबूत होगा। आशा है कि संसद में गतिरोध जल्द टूटेगा और सार्थक चर्चा शुरू होगी।

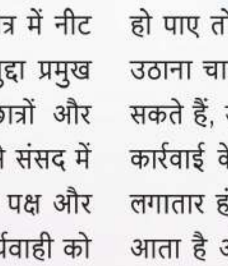

संजय राय

***

एकाधिकार

डॉ. शुभ्रता मिश्रा

देश के किसी भी वर्ग के लोगों के लिए मोबाइल फोन और इंटरनेट जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है, लेकिन टेलीकॉम कम्पनियों के मनमाने कारभार के कारण उपभोक्ताओं को ठगा जा रहा है।

टेलीकॉम कम्पनियों की दादागिरी

आधुनिक डिजिटल युग में मोबाइल फोन और इंटरनेट मानव जीवन की एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुके हैं। शिक्षा, व्यापार, बैंकिंग से लेकर मनोरंजन तक सब कुछ एक क्लिक पर निर्भर हो गया है। इस बढ़ती निर्भरता के बीच भारतीय दूरसंचार यानी टेलीकॉम क्षेत्र में एक गम्भीर संकट उभर कर सामने आया है और वह है टेलीकॉम कम्पनियों का मनमाना कारभार। स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि आम भारतीय उपभोक्ता स्वयं को बेबस, मजबूर और ठगा हुआ अनुभव कर रहे हैं।

टेलीकॉम कम्पनियों का सबसे बड़ा और परेशान करने वाला कारभार यह है कि वे बिना किसी पूर्व चेतावनी या ठोस कारण के अचानक अपने रिचार्ज प्लान के दाम बढ़ा देती हैं। अचानक एक दिन पता चलता है कि जो फलां प्लान कल तक 299 का था, वह अब 349 या 399 का हो चुका है। मध्यमवर्गीय और गरीब परिवारों के लिए मोबाइल का मासिक खर्च अब बिजली के बिल से भी अधिक होता जा रहा है। आपको याद होगा कुछ समय पहले तक भी उपभोक्ताओं के पास अपनी आवश्यकता के हिसाब से रिचार्ज चुनने की स्वतंत्रता थी। यदि किसी को केवल बात करनी होती थी तो वह 10, 20 या 50 का छोटा टॉकटाइम रिचार्ज करा लेता था, लेकिन आज कम्पनियों ने इस विकल्प को पूरी तरह समाप्त कर दिया है। यदि आप केवल कॉल करने या अपने नम्बर को चालू रखने के लिए कोई छोटा या सस्ता प्लान लेना चाहते हैं तो वह बाजार में उपलब्ध ही नहीं है। कम्पनियों ने न्यूनतम रिचार्ज की सीमा इतनी बढ़ा दी है कि सभी को मजबूरन अधिक रुपयों वाला वह रिचार्ज करना पड़ता है जिसमें प्रतिदिन 1.5 जीबी या 2 जीबी डेटा मिलता है, भले ही उस डेटा की कोई भी आवश्यकता न हो।

इन दिनों मार्केटिंग और फ्रॉड मैसेज की बाढ़ या कहें कि आतंक सा छाया हुआ है, जिससे निश्चित तौर पर उपभोक्ताओं की निजता का हनन हो रहा है। कम्पनियों की ओर से प्रतिदिन दर्जनों मार्केटिंग कॉल्स और मैसेज आते हैं। सबसे चिंताजनक बात यह है कि इन मैसेजेस में कई फ्रॉड और फिशिंग लिंक होते हैं। सीधे-साधे लोग इन झांसों में आकर अपने परिश्रम की कमाई गंवा बैठते हैं। एक विडम्बना और है कि जब किसी उपभोक्ता को नेटवर्क की समस्या होती है, गलत रुपए कट जाते हैं या सिम कार्ड से जुड़ी कोई परेशानी होती है तो कस्टमर केयर से सम्पर्क करना किसी मानसिक प्रताड़ना से कम नहीं होता। हेल्पलाइन नम्बरों पर कॉल करने पर लम्बे समय तक केवल कम्प्यूटर की रिकॉर्ड की हुई आवाज ही सुननी पड़ती है। अब सम्बंधित अधिकारियों से बात करना कठिन सा हो गया है। किसी वास्तविक कस्टमर केयर अधिकारी से बात करने के विकल्प को जानबूझकर इतना उलझा दिया गया है कि आम उपभोक्ता हताश होकर फोन काट देता है। कम्पनियां रुपए लेने में तो सबसे आगे रहती हैं, लेकिन जब सेवा देने या शिकायत निवारण की बात

आती है तो वे पूरी तरह से गैर-जिम्मेदार हो जाती हैं।

इस पूरे संकट और कम्पनियों के तानाशाही कारभार के पीछे कोई तकनीकी खराबी नहीं बल्कि बाजार का एक कड़वा आर्थिक सच है। जब किसी भी बड़े बाजार में गिने-चुने लोग या कम्पनियां ही राज करती हैं तो उसे अर्थशास्त्र की भाषा में 'अल्पअधिकार' या 'ओलिगोपॉली' अथवा व्यावहारिक रूप से 'एकाधिकार' कहा जाता है। कहने को तो भारत का टेलीकॉम सेक्टर दुनिया का सबसे बड़ा मोबाइल बाजार है, जहां 120 करोड़ से भी अधिक मोबाइल कनेक्शन हैं, लेकिन पिछले 8-10 सालों में इसमें बेहद तेजी से बदलाव देखने को मिला है। पहले जहां कई प्रमुख टेलीकॉम कम्पनियां थीं और कड़ी प्रतिस्पर्धा थी, अब 2025-2026 के आंकड़ों के अनुसार भारत का वायरलेस/ब्रॉडबैंड टेलीकॉम बाजार मुख्य रूप से दो कम्पनियों रिलायंस जियो और भारती एयरटेल के वर्चस्व में सीमित होकर रह गया है। रिलायंस जियो की बाजार हिस्सेदारी लगभग 40% से 50% के बीच है और इसके ग्राहकों की कुल संख्या 53 करोड़ के आंकड़े को पार कर चुकी है। दूसरी ओर भारती एयरटेल की 31-38% बाजार हिस्सेदारी है और 36 करोड़ से अधिक मोबाइल ग्राहक हैं। वहीं आंकड़ों की मानें तो वोडाफोन आइडिया (वीआई) लगभग 15% से 18% के बीच बाजार हिस्सेदारी के साथ लगातार ग्राहक घट रहे हैं। बीएसएनएल के पास वर्तमान में लगभग 9.29 करोड़ मोबाइल ग्राहक हैं, जो मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में है। कुल मिलाकर देखा जाए तो नवीनतम आंकड़ों के अनुसार जियो और एयरटेल मिलकर भारत के मोबाइल टेलीकॉम बाजार के लगभग 80% हिस्से को नियंत्रित करते हैं। हालांकि यह भी सच है कि इस संरचना ने करोड़ों लोगों को सस्ता हाई-स्पीड डेटा उपलब्ध कराया है, लेकिन उपभोक्ताओं के लिए विकल्प की कमी, कीमतों पर नियंत्रण, सेवा की गुणवत्ता और पारदर्शिता जैसे गम्भीर मुद्दे भी पैदा हो गए हैं। टेलीकॉम कम्पनियों की इस निरंकुशता का सबसे बुरा असर आम जनता विशेषरूप से समाज के कमजोर वर्गों पर पड़ रहा है। छात्रों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है क्योंकि ऑनलाइन शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए इंटरनेट आवश्यक है। महंगे रिचार्ज के कारण गरीब छात्र डिजिटल रूप से पिछड़ रहे हैं। गांवों में रहने वाले लोगों के लिए जो सिर्फ अपने परिवार से जुड़े रहने के लिए फोन का प्रयोग करते हैं, हर महीने 300-400 का रिचार्ज कराना एक बड़ा आर्थिक बोझ बन गया है। छोटे व्यापारियों को काफी हानि का सामना करना पड़ रहा है।

***

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

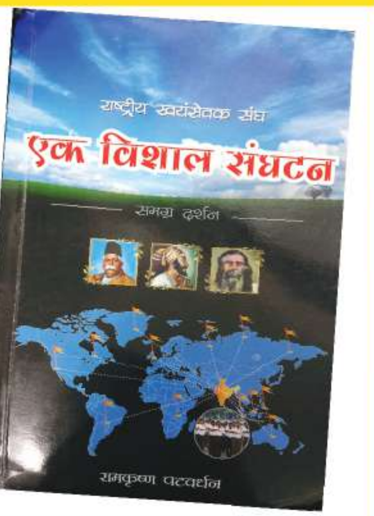

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of: **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK**

Bank : Bank of Maharashtra **Branch :** Prabhadevi
A/C No. : 60085108000 **IFSC :** MAHB0000318

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

सम्पर्क - 9594991884   Email : hindivivekvargani@gmail.com

स्लो ट्रैवल

धीमे कदमों से लें यात्रा का आनंद

आज की दौड़ते-हांफते जीवन में लोग घूमने तो जाते हैं, लेकिन उनमें यह तनाव रहता है कि कैसे समय की बचत हो। ऐसे में लोग आनन-फानन में हवाई यात्रा को प्राथमिकता देते हैं। स्लो ट्रैवल का अर्थ है धीरे-धीरे यात्रा करना, जगह को रस ले-लेकर अनुभव करना, अनुभव को जीना आदि शामिल है। स्लो ट्रैवल की शुरुआत वास्तव में हमारे अपने पारम्परिक भारतीय यात्रा से हुई है। पहले लोग तीर्थयात्रा पर पैदल या बैलगाड़ी से जाते थे। रास्ते में गांव, नदियां, मंदिर और स्थानीय लोग उनके साथी बन जाते थे। स्लो ट्रैवल का सबसे बड़ा आनंद गहराई में है। तेज यात्रा में हम जगह देखते हैं, स्लो ट्रैवल में हम जगह को समझते हैं। आप यदि किसी राज्य या किसी छोटे कस्बे में घूमने के लिए जाते हैं तो आप मात्र एक दिन में किले, हवेली और हाट देखकर निकल जाएंगे, लेकिन यदि आप तीन-चार दिन वहां रहें तो अन्य चीजों का अनुभव बहुत बारीकियों के साथ करेंगे। आप स्थानीय चाय की दुकान पर बैठें, बुजुर्गों से कहानियां सुनें, घर का बना खाना खाएं और शाम को मंदिर की घंटियों के साथ सूर्यास्त देखें तो पूरा अनुभव आपके अंदर उतर जाता है। आप उस जगह की आत्मा को छू लेते हैं। यह यात्रा शारीरिक और मानसिक दोनों स्तर पर आराम देती है। तेज यात्रा में तनाव रहता है- फ्लाइट पकड़नी है, होटल चेक-इन, अगला शहर..., लेकिन स्लो ट्रैवल में आप अपने समय के मालिक होते हैं। आप सुबह देर से उठ सकते हैं, किसी पुरानी पुस्तक की दुकान में घंटों बिता सकते हैं या किसी लोक कलाकार के साथ बातें कर सकते हैं। इससे यात्रा तनाव मुक्ति का माध्यम बन जाती है। कई अध्ययनों में पाया गया है कि धीमी यात्रा करने वाले लोग ज्यादा खुश और संतुष्ट रहते हैं। पर्यावरण के लिए भी स्लो ट्रैवल बेहद लाभदायक है। हवाई यात्रा और लगातार वाहनों के प्रयोग से कार्बन उत्सर्जन बढ़ता है, जबकि पैदल, साइकिल, बस या ट्रेन से यात्रा करना पर्यावरण अनुकूल होता है। जब हम कम जगहों पर ज्यादा समय बिताते हैं तो हमारी खपत भी कम होती है। हम लोकल प्रोडक्ट खरीदते हैं, छोटे गेस्टहाउस में रहते हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था को सहारा देते हैं।

> घूमने जाना और यात्रा करना भला किसे नहीं पसंद होगा। लोग तनाव व दैनिक दिनचर्या से अलग होकर घूमने जाते हैं और आनंद लेते हैं। इन्हीं में से एक है स्लो ट्रैवल।

भारत जैसे विविध देश में स्लो ट्रैवल की अपार सम्भावनाएं हैं। केरल के बैकवाटर्स में हाउसबोट पर धीरे-धीरे तैरना, हिमाचल के किसी छोटे गांव में कुछ दिन रहना, पूर्वोत्तर के जंगलों में ट्रेकिंग करना या मध्य प्रदेश के किसी आदिवासी गांव में लोक संस्कृति को करीब से देखना- ये सब स्लो ट्रैवल के बेहतरीन उदाहरण हैं। स्लो ट्रैवल हमें सिखाता है कि जल्दबाजी छोड़कर वर्तमान में जीना सीखना चाहिए। असली आनंद गहराई में छिपा है, सतह पर नहीं। यदि आप अगली बार यात्रा की योजना बना रहे हैं तो एक बार प्रयास करें- कम जगहें चुनें, ज्यादा समय रखें और पूरी तरह से खुलकर अनुभव करें।

***

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

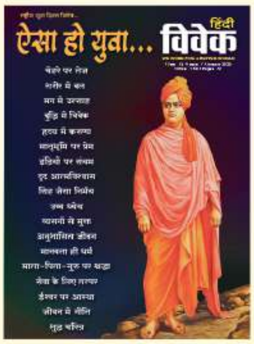

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

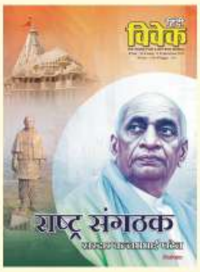

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

शिक्षा

पर्यावरण संरक्षण को यदि करियर के रूप में चुनते हैं, तो आप केवल अपने लिए जीविकोपार्जन नहीं कर रहे होते, बल्कि आप पर्यावरण के रक्षक बनकर उसकी सेवा कर रहे होते हैं और इनमें आपको सुरक्षित व सुनहरा भविष्य भी दिखाई देता है।

अपर्णा झा

जब बनाना हो पर्यावरण में करियर

आज जब हम चारों ओर दृष्टि डालते हैं, तो विकास के नाम पर प्रकृति का अंधाधुंध दोहन हो रहा है, पेड़ पहाड़ और हरे वृक्षों से भरे घने वन को निर्ममता से स्वाहा करके वहां विकास के नाम पर कंक्रीट का किला गढ़ा जा रहा है। प्रकृति ने भी इस अंधाधुंध दोहन से आए असंतुलन का उत्तर भयावह आपदाओं के रूप में दिया है। वर्ष 2013 की केदारनाथ की प्रलयंकारी त्रासदी हो, महाविनाशक सुनामी हो या फिर उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के संवेदनशील पर्वतीय क्षेत्रों में प्रत्येक वर्ष होने वाले भीषण भूस्खलन-ये सभी इस बात के गवाह हैं कि हम प्रकृति की सहनशक्ति की सीमा पार कर चुके हैं। अभी हाल के दिनों में केरल के वायनाड में हुआ दर्दनाक भूस्खलन चीख-चीख कर कह रहा है कि पश्चिमी घाट जैसी नाजुक पारिस्थितिकी प्रणालियों के साथ किया गया खिलवाड़ कितना घातक हो सकता है। इन आपदाओं के बीच, अब मूक दर्शक बने रहने का समय बीत चुका है। आज पर्यावरण को सहेजना केवल एक वैज्ञानिक आवश्यकता नहीं, बल्कि धरती को बचाने की पुकार है। ऐसे में पर्यावरण विज्ञान में करियर चुनना केवल एक नौकरी पाना नहीं है, बल्कि प्रकृति की सेवा के लिए स्वयं को समर्पित करना है। आने वाले समय में इस क्षेत्र के विशेषज्ञों की मांग सबसे अधिक होने वाली है।

पर्यावरण विज्ञान में उपलब्ध पाठ्यक्रम (कोर्स)

यदि आप प्रकृति को बचाने के इस महायज्ञ में आहुति देना चाहते हैं, तो बारहवीं (विज्ञान वर्ग) के बाद आपके लिए कई मार्ग खुलते हैं:

स्नातक स्तर (अवधि: 3 से 4 वर्ष)

बी.एस.सी. पर्यावरण विज्ञान (पर्यावरण विज्ञान में स्नातक): इसके अंतर्गत पारिस्थितिकी, मृदा विज्ञान, जल संसाधन प्रबंधन, प्रदूषण नियंत्रण और जैव विविधता का गहन अध्ययन कराया जाता है। बी.टेक. पर्यावरण अभियांत्रिकी: यह तकनीकी और व्यावहारिक समाधानों पर केंद्रित है, जैसे कचरा प्रबंधन, वायु शोधन तकनीक और हरित ऊर्जा (नवीकरणीय ऊर्जा) का विकास।

स्नातकोत्तर स्तर (अवधि: 2 वर्ष)

एम.एस.सी. पर्यावरण विज्ञान / पर्यावरण प्रबंधन

एम.टेक. पर्यावरण अभियांत्रिकी / सतत विकास

एम.बी.ए. वानिकी / पर्यावरण प्रबंधन (प्राकृतिक संसाधनों के व्यावसायिक प्रबंधन हेतु)

शीर्ष मान्यता प्राप्त संस्थान

भारत में पर्यावरण अध्ययन और अनुसंधान के लिए कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के मान्यता प्राप्त संस्थान हैं।

भारतीय विज्ञान संस्थान (आई.आई.एस.सी.)बेंगलुरु

एम.टेक. एवं पी. एच. डी. (पर्यावरण अनुसंधान और सततता)

भारतीय वन प्रबंधन संस्थान (आई.आई.एफ.एम.) भोपाल

पी.जी.डी.एफ.एम. (वानिकी एवं पर्यावरण प्रबंधन में एम.बी.ए.

समकक्ष)

- ❋ जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे.एन.यू.) नई दिल्ली
- ❋ एम.एस.सी. एवं पी.एच.डी. (पर्यावरण विज्ञान स्कूल)
- ❋ वन अनुसंधान संस्थान (एफ.आर.आई.)देहरादून
- ❋ एम.एस.सी. (वानिकी, पर्यावरण प्रबंधन)
- ❋ बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बी.एच.यू.)वाराणसी
- ❋ बी.एस.सी., एम.एस.सी. एवं पी.एच.डी. (पर्यावरण एवं सतत विकास संस्थान)
- ❋ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.टी.) विभिन्न केंद्र एम.टेक. एवं पी.एच.डी. (पर्यावरण अभियांत्रिकी)

आवेदन और प्रवेश प्रक्रिया (कब और कैसे करें?)

सी.यू.ई.टी.-यू.जी. / पी.जी. (सामान्य विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा): जे.एन.यू., बी.एच.यू. और दिल्ली विश्वविद्यालय जैसे केंद्रीय विश्वविद्यालयों में प्रवेश के लिए राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा आयोजित की जाती है।

आवेदन का समय: इसके फॉर्म आमतौर पर प्रत्येक साल फरवरी से मार्च के बीच आते हैं।

आई.आई.टी.-जैम और गेट: आई.आई.टी. में उच्च स्तरीय अनुसंधान या एम.टेक. के लिए इन परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना होता है। इसके आवेदन सितम्र से नवम्बर के दौरान स्वीकार किए जाते हैं। विशेषज्ञ संस्थान (जैसे एफ.आर.आई. और आई.आई.एफ.एम.): ये संस्थान अपनी स्वतंत्र प्रवेश परीक्षाएं भी आयोजित करते हैं, जिनके फॉर्म मार्च से मई के बीच निकलते हैं।

करियर की सम्भावनाएं और सेवाएं

कोर्स पूरा करने के बाद देश-विदेश में सेवा के कई महत्वपूर्ण अवसर उपलब्ध हैं।

पर्यावरण सलाहकार: आधारभूत ढांचा परियोजनाओं (सड़क, बांध, उद्योग) को शुरू करने से पहले 'पर्यावरण प्रभाव आकलन' (ई.आई.ए.) करना अनिवार्य होता है। विशेषज्ञ के रूप में आप सरकार और कम्पनियों को सलाह देते हैं कि विकास कार्य से प्रकृति को कम से कम नुकसान कैसे पहुंचे।

प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सी.पी.सी.बी. / एस.पी.सी.बी.): केंद्र और राज्य स्तर पर प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों में पर्यावरण वैज्ञानिकों और अभियंताओं की सीधी भर्ती होती है, जो पर्यावरण नियमों को लागू करवाते हैं। कॉर्पोरेट सततता और ई.एस.जी. विशेषज्ञ: वर्तमान में हर छोटी-बड़ी कंपनी के लिए कार्बन उत्सर्जन कम करना और हरित मानकों का पालन करना अनिवार्य हो गया है।

❋❋❋

31 जुलाई/जन्म-दिवस

सामाजिक यथार्थ, किसानों की पीड़ा, छुआछूत और शोषण के विरुद्ध अपनी तीखी लेखनी के लिए प्रसिद्ध प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य को नई ऊंचाई दी। इनकी रचनाएं आज भी जन-मन को छूती हैं।

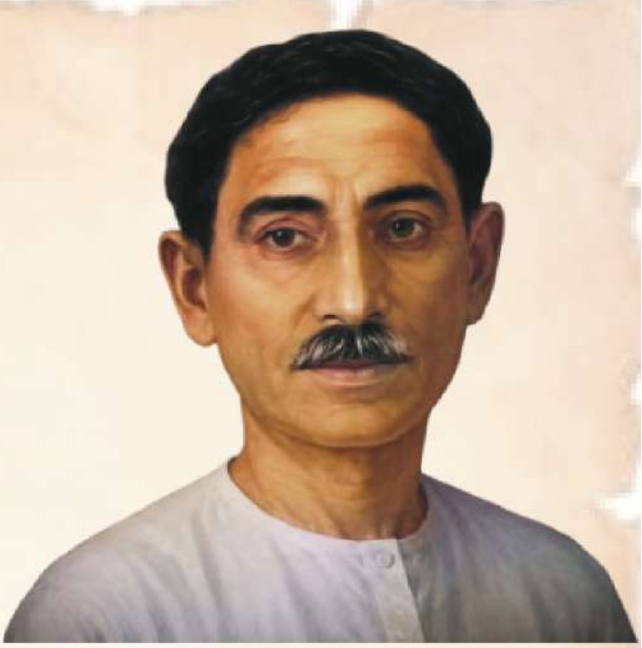

यथार्थवादी उपन्यासकार प्रेमचंद

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद का मूल नाम धनपत राय था। उनका जन्म ग्राम लमही (वाराणसी, उ.प्र.) में 31 जुलाई, 1880 को हुआ था। घर में उन्हें नवाब कहते थे। उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्र में मुस्लिम प्रभाव के कारण बोलचाल में प्रायः लोग उर्दू का प्रयोग करते थे। उन दिनों कई स्थानों पर पढ़ाई भी मदरसों में ही होती थी। इसीलिए 13 वर्ष की अवस्था तक वे उर्दू माध्यम से ही पढ़े। इसके बाद उन्होंने हिंदी पढ़ना और लिखना सीखा।

1898 में कक्षा 10 उत्तीर्ण कर वे चुनार में सरकारी अध्यापक बन गए। उन दिनों वहां एक गोरी पल्टन भी रहती थी। एक बार अंग्रेज दल और विद्यालय के दल का फुटबॉल मैच हो रहा था। विद्यालय वाले दल के जीतते ही छात्र उत्साहित होकर शोर करने लगे। इस पर एक गोरे सिपाही ने एक छात्र को लात मार दी। यह देखते ही धनपतराय ने मैदान की सीमा पर लगी झंडी उखाड़ी और उस सिपाही को पीटने लगे। यह देखकर छात्र भी मैदान में आ गए। छात्र और उनके अध्यापक का रोष देखकर अंग्रेज खिलाड़ी भाग खड़े हुए।

प्रेमचंद छुआछूत, ऊंच-नीच, जातिभेद आदि के घोर विरोधी थे। अपनी पहली पत्नी के निधन के बाद उन्होंने एक बाल विधवा शिवरानी से पुनर्विवाह किया। वे बाल गंगाधर तिलक तथा गांधी जी से बहुत प्रभावित थे। युवकों में क्रांतिकारी चेतना का संचार करने के लिए उन्होंने इटली के स्वाधीनता सेनानी मैजिनी और गैरीबाल्डी तथा स्वामी विवेकानंद की छोटी जीवनियां लिखीं।

अध्यापन के साथ पढ़ाई करते हुए उन्होंने बी.ए. कर लिया। अब उनकी नियुक्ति हमीरपुर में जिला विद्यालय उपनिरीक्षक के पद पर हो गई। इस दौरान उन्होंने देशभक्ति की अनेक कहानियां लिखकर उनका संकलन 'सोजे वतन' के नाम से प्रकाशित कराया। इसमें उन्होंने अपना नाम 'नवाबराय' लिखा था। जब शासन को इसका पता लगा तो उन्होंने नवाबराय को बुलवा भेजा। जिलाधीश ने उन्हें इसके लिए बहुत फटकारा और पुस्तक की सब प्रतियां जब्त कर जला दीं। जिलाधीश ने यह शर्त भी लगाई कि उनकी अनुमति के बिना अब वे कुछ नहीं लिखेंगे। नवाबराय लौट तो आए पर बिना लिखे उन्हें चैन नहीं पड़ता था। अतः उन्होंने अपना लेखकीय नाम 'प्रेमचंद' रख लिया। प्रेमचंद अब तक उर्दू में लिखते थे, पर अब उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम हिंदी को बनाया। उन्होंने अपने कमरे में क्रांतिवीर खुदीराम बोस का चित्र लगा लिया, जिसे कुछ दिन पूर्व ही फांसी दी गई थी। उन दिनों रूस में समाजवादी क्रांति हुई थी। प्रेमचंद के मन पर उसका भी प्रभाव पड़ा और उन्होंने अपने 'प्रेमाश्रम' नामक उपन्यास में उसकी प्रशंसा की।

प्रेमचंद जनता को विदेशी शासकों के साथ ही जमींदार और पंडे-पुजारियों जैसे शोषकों से भी मुक्त कराना चाहते थे। वे स्वयं को इस स्वाधीनता संग्राम का एक सैनिक समझते थे, जिसके हाथ में बंदूक की जगह कलम है। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को आधार बनाकर 'कर्मभूमि' नामक उपन्यास भी लिखा। प्रेमचंद की रचनाओं में जन-मन की आकांक्षा प्रकट होती थी। आम बोलचाल की भाषा में होने के कारण उनकी कहानियां आज भी बड़े चाव से पढ़ी जाती हैं। उनके कई उपन्यासों पर फिल्म भी बनी हैं। सरल और संतोषी स्वभाव के प्रेमचंद का 8 अक्टूम्बर, 1936 को निधन हुआ।

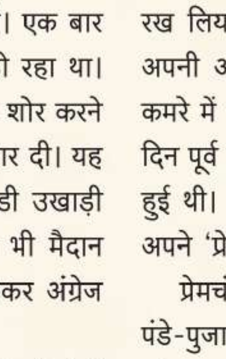

विजय कुमार

***

FIFA WORLD CUP 2026

स्पेन बना विश्व फुटबॉल का बादशाह

फीफा विश्व कप 2026 के फाइनल में स्पेन ने अर्जेंटीना को 1-0 से हराकर विश्व चैम्पियन का खिताब जीत लिया। मेस्सी की आखिरी आशा को तोड़ते हुए स्पेन ने शानदार टीम वर्क और रक्षात्मक खेल से इतिहास रच दिया।

खेल

इस विश्व कप में जिस खिलाड़ी पर दुनिया भर के फुटबॉल प्रेमियों की दृष्टि लगी हुई थी, उस खिलाड़ी का नाम लियोनेल मेसी था। यह आशा थी अर्जेंटीना और विश्व के महानतम खिलाड़ियों में अग्रिम पंक्ति में खड़े मेसी न केवल अपने देश को विश्व विजेता बनाएंगे बल्कि फुटबॉल की दुनिया से एक सम्मानजनक विदाई लेंगे, लेकिन ऐसा नहीं हो सका।

फीफा विश्व कप 2026 के फाइनल मैच को स्टेडियम और टेलीविजन के रिकार्ड संख्या में लगभग 180 करोड़ दर्शकों ने देखा। दुनिया भर में लोगों ने यह फाइनल स्टेडियम, घरों और ओपन एयर स्क्रीनिंग में बड़ी तन्मयता और बेहद दिलचस्पी के साथ देखा। इस फाइनल में विश्व कप के टॉप स्कोरर्स और टूर्नामेंट के सबसे मजबूत डिफेंस के बीच का मुकाबला था। अर्जेंटीना ने पूरे टूर्नामेंट में 19 गोल किए थे और स्पेन ने सिर्फ 1 गोल खाया था। इस मैच में अर्जेंटीना के करिश्माई गोलकीपर एमिलियानो मार्टिनेज और स्पेन के भरोसेमंद उनाई सिमोन पर मैच का सारा दारोमदार था। इस फाइनल से पहले स्पेन और अर्जेंटीना के बीच सभी तरह के टूर्नामेंटों और इंटरनेशनल मैचों में कुल 14 बार मुकाबले हुए थे। दोनों ने 6-6 मैच जीते थे और 2 बराबरी पर समाप्त हुए थे। इससे पहले दोनों टीमें 1966 में विश्व कप में भिड़ी थीं, जिसमें अर्जेंटीना 2-1 से विजयी हुई थी। इस दृष्टि से दोनों के लिए जीत असीम प्रतिष्ठा का प्रश्न था।

राजीव रोहित

भारतीय समयानुसार रात 12.30 बजे अमेरिका के न्यू जर्सी के मेटलाइफ स्टेडियम में रविवार को यह मैच लगभग 80 हजार दर्शकों की उपस्थिति में खेला गया। निश्चित रूप से दोनों टीमों का आत्मविश्वास सातवें आसमान पर था। इसलिए यह मैच दोनों टीम के लिए जीवन-मरण के प्रश्न जैसा था। यह देखने को भी मिला जब निर्धारित 90

मिनटों तक कोई गोल नहीं हुआ। दोनों टीमों के खिलाड़ी एक दूसरे पर जबरदस्त हमला करने का कोई अवसर नहीं छोड़ रहे थे और अपना सब कुछ झोंक रहे थे। मेसी के पास ज्यादा गेंद आ नहीं रही थी। इस कारण मेसी और उनके योद्धा स्पेन के किले में सेंध नहीं लगा सके। अर्जेंटीना के इतिहास में यह पहला अवसर था जब वह किसी विपक्षी टीम के विरुद्ध निर्धारित समय में एक भी गोल नहीं कर सकी थी। दूसरी ओर स्पेन ने जबरदस्त टीम वर्क दिखाते हुए अर्जेंटीना के पसीने छुड़ा दिए। आपस में तनाव इतना कि अर्जेंटीना के खिलाड़ियों ने 25 फाउल किए। उन्हें 6 बार पीला कार्ड दिखाया गया और 1 रेड कार्ड भी उन्हें देखना पड़ा। अंततः अतिरिक्त समय में स्पेन के फेरोन टेरोस ने एक खूबसूरत मैदानी गोल दागा और 1 शून्य से आगे हो गई। इस बढ़त को बनाए रखने के लिए फिर वह पूरी तरह रक्षात्मक खेल खेलती रही और अपनी इस योजना में रेफरी की अंतिम सिटी बजने तक पूरी तरह सफल रही। स्पेन के विश्व विजेता बनते ही जहां पूरा स्पेन जश्न में डूब गया और

दूसरी ओर अर्जेंटीना शोक में डूब गया। 10 साल बाद विश्व विजेता बनने पर समस्त स्पेन के लिए यह सर्वश्रेष्ठ अवसर था कि पूरा देश विजय उत्सव में डूब जाए और जमकर खुशियां मनाएं। आखिर उसने फुटबॉल के पिछले दो दशकों के इस प्रसिद्ध कथन (मेसी को रोक लो तो अर्जे टीना अपने आप रुक जाएगा) को पूरी तरह मिटाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। मेसी के लिए सम्भवतः यह अंतिम मैच था, जो उन्हें हमेशा एक दुःस्वप्न की तरह सताएगा। वो 8 गोल करके फ्रांस की ओर से 10 गोल करने वाले एमबापे से पीछे रह गए, जिन्हें गोल्डन बूट मिला। इस मैच के साथ लगातार 38 मैचों तक अपराजित विश्व विजेता स्पेन की टीम को 50 मिलियन डॉलर और उप विजेता अर्जेंटीना को 33 मिलियन डॉलर की राशि मिली। अब विश्व फुटबॉल में स्पेन एक ऐसा देश बन गया है, जिसके पास पुरुष और महिला विश्व फुटबॉल का विश्व चैम्पियन है। अगले चार सालों तक स्पेन विश्व फुटबॉल का बादशाह है।

***

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

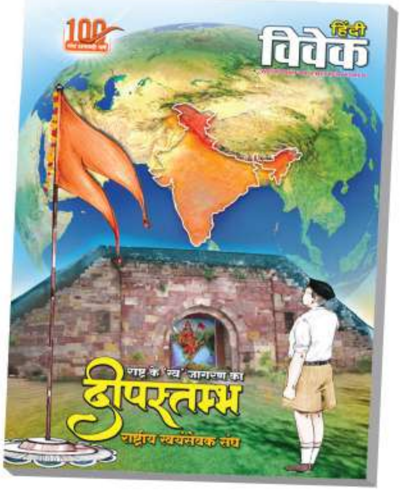

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

इधर भी देखें

महाकाल पहुंचा 8 लाख का दुर्लभ आम

उज्जैन के प्रसिद्ध महाकाल मंदिर में श्रद्धालुओं द्वारा सोना-चांदी और नकदी चढ़ाने का सिलसिला तो आम है, लेकिन हाल ही में एक अनोखा चढ़ावा देखने को मिला। जबलपुर से आए एक श्रद्धालु दम्पत्ति ने बाबा महाकाल को दुनिया की सबसे दुर्लभ और महंगी किस्म के आम अर्पित किए। इन आमों की अंतरराष्ट्रीय बाजार में कुल कीमत करीब 8 लाख रुपये बताई जा रही है। दम्पत्ति ने ऑस्ट्रेलिया के प्रसिद्ध आर 2- ई 2 आम के साथ ही ऑस्ट्रेलियन मैंगो भी महाकाल के दरबार में चढ़ाए। इन दुर्लभ प्रजातियों के आमों को देखने के लिए मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं के बीच भारी भीड़ जुट गई।

अब नहीं सताएगा डेंगू का डर

सेंट्रल ड्रग्स स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गेनाइजेशन ने जापानी दवा कम्पनी ताकेदा की डेंगू वैक्सीन को मंजूरी दे दी है। इसके साथ ही यह भारत की पहली स्वीकृत डेंगू वैक्सीन बन गई है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसे लगवाने से पहले यह जांच कराने की आवश्यकता नहीं होती कि व्यक्ति को पहले कभी डेंगू हुआ है या नहीं। इससे बड़े स्तर पर टीकाकरण अभियान चलाना आसान हो सकता है। यह वैक्सीन पहले ही यूरोपीय संघ, ब्रिटेन, ब्राजील, इंडोनेशिया और अर्जेंटीना समेत 40 से अधिक देशों में मंजूरी प्राप्त कर चुकी है। अब भारत भी इस सूची में शामिल हो गया है।

बदलेगी भारत की ऊर्जा की तस्वीर

ओएनजीसी ने लद्दाख की पुगा घाटी में 1 मेगावाट क्षमता का पायलट जियोथर्मल पावर प्लांट स्थापित करेगी। परियोजना सफल होने पर भारत में जियोथर्मल ऊर्जा का व्यावसायिक उपयोग शुरू हो सकेगा।

लद्दाख जैसे दूरदराज क्षेत्रों को 24 घंटे भरोसेमंद बिजली उपलब्ध कराने में सहायता मिलेगी। इससे डीजल और अन्य जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम होगी और स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा मिलेगा।

यह परियोजना भारत के 2030 तक 500 गीगावाट नॉन-फॉसिल फ्यूल आधारित बिजली क्षमता के लक्ष्य को प्राप्त करने में भी अहम भूमिका निभाएगी।

समाचार

दिव्यांग कल्याणकारी संस्था में मिलेंगे कृत्रिम अंग

श्री सत्य साई सेवा संगठन (पश्चिम महाराष्ट्र), सक्षम (पुणे महानगर) और दिव्यांग कल्याणकारी संस्था एवं संशोधन केंद्र (वानवडी, पुणे) के संयुक्त तत्वावधान में दिव्यांग व्यक्तियों को मुफ्त कृत्रिम पैर और कृत्रिम हाथ वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दिव्यांग कल्याणकारी संस्था में विगत 12 और 13 जुलाई को यह 2 दिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सत्य साई सेवा संगठन ने पहल करते हुए दिव्यांगों को मुफ्त कृत्रिम अंग देने के लिए पुणे और आसपास के क्षेत्रों के दिव्यांग व्यक्तियों को इस कार्यक्रम का निमंत्रण दिया था। लगभग 100 दिव्यांग व्यक्तियों का पंजीकरण हुआ था।

विदित हो कि किसी दुर्घटना या अन्य कारणों से जिन्होंने अपना पैर या हाथ खो दिया है, उनके लिए इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया था ताकि उनका जीवन सरल, सुखकर और सुखी हो सके।

इन सभी व्यक्तियों के लिए 12 और 13 जुलाई 2026 को दिव्यांग कल्याणकारी संस्था में उनके आवश्यक अंगों का माप लिया गया। 12 जुलाई 2026 को सुबह 11 बजे इस उपक्रम का उद्घाटन सीरम इंस्टिट्यूट के सिविल विभाग के निदेशक रोहित शिंदे के करकमलों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर उन्होंने सभी दिव्यांगों को इस योजना का लाभ उठाकर अपना जीवन सुखमय बनाने के लिए शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम का प्रास्ताविक सत्य साई सेवा संगठन की लक्ष्मीराव ने रखा और उन्होंने इस कार्यक्रम की भूमिका स्पष्ट की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रोहित शिंदे का परिचय दिव्यांग कल्याणकारी संस्था के कार्याध्यक्ष मुरलीधर कचरे ने कराया। रोहित शिंदे की सामाजिक कार्य की पृष्ठभूमि है- उन्हें अपनी मां से सामाजिक कार्य की प्रेरणा मिली, ऐसा उनके परिचय में बताया गया।

इस कार्यक्रम के लिए पुणे जिले तथा महाराष्ट्र के अन्य जिलों से लगभग 100 दिव्यांग व्यक्ति माप देने के लिए आए थे। उन सभी के लिए दिव्यांग कल्याणकारी संस्था में सुबह का नाश्ता, दोपहर का भोजन और रहने की व्यवस्था की गई थी, जिसका लाभ इन सभी दिव्यांग व्यक्तियों को मिला। आने वाले दो सप्ताह में इन सभी दिव्यांग व्यक्तियों को कृत्रिम अंग वितरण का कार्यक्रम आगामी दिनों में आयोजित किया जाएगा।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सत्य साई सेवा संगठन के सुचित्रा देवरे, नरेश हिराणी आदि कार्यकर्ताओं ने सहायता की। दिव्यांग कल्याणकारी संस्था की स्कूल की प्रधानाध्यापिका शिवानी सुतार, डॉ. विजय हरणे, वसतिगृह अधीक्षिका श्रीमती धनश्री बेके तथा अन्य सभी शिक्षकों ने भी इस कार्यक्रम में सहयोग दिया। ये सभी कृत्रिम अंग जो दिव्यांग व्यक्तियों को मिलने वाले हैं, गुड़गांव की 'इंस्टालिंब' नामक कम्पनी द्वारा तैयार करके दिए जाएंगे। ये अत्याधुनिक तकनीक के कृत्रिम अंग होंगे, जो इन दिव्यांग व्यक्तियों को प्राप्त होंगे। इस कार्यक्रम में सक्षम पुणे महानगर के सचिव अशोक जवेरी भी उपस्थित थे।

Pitambari Products Pvt. Ltd.
Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599, South: 9886553105, East: 7752023380, 9867102999,
CRM: 022 - 67035564 / 5699. Toll Free: 18001031299.
Visit: www.pitambari.com/shop I CIN: U52291MH1989PTC051314.